ISSN : 2349-4190

कार्टून चैनलों के देखने से बच्चों में परानुभूति का विकास एवं महत्व

डॉ. प्रीति श्रीवास्तव

प्राचार्य :विधिक शैक्षणिक संस्थान नाथू वरखेड़ा नीलवड, भोपाल (म.प्र.) भारत.

शोध सारांश :

*आजकल टेलीविजन बच्चों के दृष्टिकोण और मूल्यों के निर्धारण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। आज का युग विज्ञान का युग है। विज्ञान ने इंसान की जिंदगी बदल कर रख दी है। विज्ञान एवं तकनीकी विकास हमारी रोजमर्रा की जिंदगी में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। दूरदर्शन दर्शकों के उदारवादी संचार माध्यम के रूप में अच्छा प्रभाव डालता है। अधिकतर बच्चे अपना जीवन टेलीविजन के ईर्द गिर्द पाते हैं। अधिकतर अविभावक अपने बच्चों के अध्ययन एवं भविष्य के बारे में चिन्ताग्रस्त रहते हैं। क्योंकि अधिकतर बच्चे नाश्ता, खाना, खेलना, सोने के समय तक चुम्बक की तरह दूरदर्शन के निकट रहते हैं। अभिभावक बच्चों द्वारा लगातार टेलीविजन देखने के कारण उनके ऊपर हो रहे नकारात्मक प्रभाव के कारण चिंताग्रस्त रहते हैं। परंतु आजकल टेलीविजन से बच्चों का बौद्धिक विकास, आध्यात्मिक विकास, नैतिक विकास एवं मूल्यों पर सकारात्मक प्रभाव भी पड़ते हैं। क्योंकि एक सिक्के के दो पहलू होते हैं, अच्छाई और बुराई। कहा जाता है कि लोग "अच्छा रास्ता कम चुनते हैं, गलत रास्ता जल्दी नजर आता है"। आजकल आधुनिकीकरण एवं महंगाई के कारण माता–पिता, दोनों ही काम पर जाते हैं। महिलाओं को घर के बाहर जाना पड़ता है। आजकल संयुक्त परिवार के विघटन एवं एकाकी परिवार के चलन होने के कारण बच्चों को अकेला रहना पड़ता है। इसलिए टेलीविजन दादी–दादा, नानी–नाना इत्यादि की तरह परिवार की कमी पूरी करता हैं। **कार्टून का शाब्दिक अर्थ** : मजाक, विनोदी ड्राइंग या व्यंग्य में ही आमतौर से प्रयोग किया गया। वर्तमान में कार्टून कला है, जो ड्राइंग, चित्र या इलेक्ट्रॉनिक मीडिया और एनीमेटेड डिजिटल मीडिया कार्टून आदि से सम्बन्धित है। प्रस्तुत शोध पत्र में इस विषयक बच्चों में परानुभूति के विकास एवं महत्व को प्रतिपादित किया गया है।*

I भूमिका

बच्चे स्कूल से आते ही टेलीविजन खोल कर अपना मन पसंद कार्यक्रम देखने लगते हैं और साथ ही अपने सभी कार्य जैसे– खाना खाना, स्कूल का गृह–कार्य करना इत्यादि करते हैं, जिससे पढ़ाई के प्रति उनकी एकाग्रता खत्म होती जा रही है। बच्चों को कार्टून बहुत पसंद होते हैं, जिनमें से कुछ कार्टून जिनसे शैक्षणिक, तकनीकी एवं अविष्कार संबंधी जानकारी मिलती है तथा कुछ कार्टून इस प्रकार के होते हैं, जिनमें हिंसा तथा अश्लीलता दिखाई देती है, जो बच्चों को गलत रास्ते पर जाने के लिये प्रेरित करते हैं। साथ–ही–साथ उनके सामाजिक एवं नैतिक मूल्यों पर प्रभाव पड़ता है।

बच्चों को कार्टून बहुत पंसद होते हैं, यह कार्टून बच्चों के मन पर रंग और कल्पना के साथ आंखो में अपील करते है। कार्टून बच्चों को समलैंगिक लगते हैं। बच्चों की दुनिया में प्यार करने के लिये रंगीन तरीका हैं। कार्टून बच्चों की मानसिकता के साथ–साथ कल्पना को भी उत्तेजित करते हैं। क्योकि कार्टून बच्चों को खिलौने जैसे लगते है। टेलीविजन के कार्टून चैनलों के कार्यक्रमों के कारण सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों प्रकार के प्रभावों की पहचान की जा रही है। इसलिए इस तरह के विषयों का चुनाव कर अध्यापन करने की पहचान की जा रही है। इसलिए इस तरह के विषयों का चुनाव कर अध्यापन करने की आवश्यकता है। क्योंकि आज वर्तमान में टेलीविजन पर 100 से अधिक चैनल प्रसारित किये जाते हैं। जिसमें अन्तर्राष्ट्रीय चैनल, मनोरंजक, धार्मिक चैनल, राजनीतिक चैनल, न्यूज चैनल बच्चों के कई कार्टून चैनल इत्यादि हैं। जो बच्चों के सामाजिक, संवेगात्मक, बौद्धिक, नैतिक, धार्मिक, मूल्यों पर प्रभाव डालते हैं।

II परानुभूति का विकास

पुरानुभूति Empatheia एक यूनानी शव्द से वना है, जिसका अर्थ परानुभूति एक भावुक मुखौटा है जो दूसरो की शारीरिक भावनाओ से अनुकरणीय क्षमताओ से सम्बन्धित परानुभूति है, जैसे रिश्तेदार दोस्तों और परिवार समुदाय में पाई जाती है। परानुभूति प्रयोगात्मक जीवन के लिए वहुत आवश्यक हैं। बच्चे जिन शिक्षक व शिक्षिका को पसंद करते है, उन शिक्षको के द्वारा वताई गई वाते बच्चे अति शीघ्र सीखते हैं, पसंद की शिक्षक, शिक्षिका के खुश होने पर वह भी खुश होते है, दुःखी होने पर दुःखी होते हैं। परानुभूति का उदाहरण यह कि बच्चों को कार्टून वहुत पसंद होते हैं, जब यह पसंद के पात्र को देखते हैं तो खुश होते हैं।

परानुभूति दो प्रकार की होती है :

(क) सक्रिय परानुभूति

(ख) निष्क्रिय परानुभूति

III पूर्व अध्ययन से संबंधित साहित्य

(1) एलिस जी.टी. और स्केरा टी.एक (1972) **"बच्चों के व्यवहार पर आक्रमक कार्टून के प्रभाव का अध्ययन"**।

(2) ओसबोम पी.के और इन्डेसली आर सी. (1971) "टी. वी. हिंसा का छोटे बच्चों की भावनात्मक प्रतिक्रिया पर प्रभाव"।

(3) मुसेन पी. और स्टरफोर्ड (1961) "बच्चों के आक्रामक खेल पर आक्रामक कार्टून का प्रभाव"।

(4) स्प्रोफिक्वन जे. गाडो. के.डी. गेसन पी. (1988), "भावनात्मक रूप से परेशान बच्चों के स्कूल सेंटिग में सामाजिक व्यवहार पर कार्टून का प्रभाव"।

(5) गोबिन, एम. डी. (2008), "बच्चों के मस्तिष्क पर **टेलीविजन कार्टून का प्रभाव**"।

IV परिकल्पना

(क) कार्टून चैनलों को देखने से लिंग के आधार पर शहरी बच्चों की परानुभूति पर अंतर नही है।

(ख) कार्टून चैनलों को देखने से ग्रामीण बच्चे लिंग के मध्य बच्चों की परानुभूति के साथ अंतर नहीं रहता हैं।

V अनुसंधान विधि

(क) न्यादर्शका आधार क्षेत्र : भोपाल जिले के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के बच्चे लिए गए।

(ख) न्यादर्श का क्षेत्र : भोपाल जिले के ग्रामीण क्षेत्र के और शहरी क्षेत्र के 25 लड़के, 25 लड़कियों को लिया गया

(ग) न्यादर्श का चुनाव : रेण्डम सेम्पलिंग द्वारा न्यादर्श का चुनाव किया गया

(च) उपकरण : परानुभूति प्रश्नावली का उपयोग किया गया। जे. वी. फॉक्स सी यान एम और गेयर स्काई द्वारा 2004 में निर्माण किया था।

(i) शहरी क्षेत्र के बच्चों के लिंग के आधार पर परानुभूति का विकास :

परानुभूति	संख्या	माध्यम	प्रमापविचलन	टी परीक्षण	सार्थकता स्तर
लड़के	25	38.44	5.81	5 25	0 01
लड़कियॉं	25	46.32	2.83		

(ii) ग्रामीण क्षेत्र के बच्चों के लिंग के आधार पर परानुभूति के विकास का महत्व है।

परानुभूति	संख्या	माध्यम	प्रमापविचलन	टी परीक्षण	सार्थकता स्तर
लड़के	25	16.96	4.40	9.93	0 01
लड़कियॉं	25	26.6	5.38		

VI निष्कर्ष

तलिका में शहरी लड़को की तुलना में शहरी लड़कियों में परानुभूति का विकास अधिक पाया गया है। लड़कियों में कार्टून देखने से परानुभूति का विकास अधिक पाया गया है। तालिका के माध्यो में सार्थक अंतर पाया गया है। तालिका नं. 2 में ग्रामीण क्षेत्र के लड़कों की तुलना में ग्रामीण लड़कियों को परानुभूति का विकास अधिक पाया है। इस प्रकार कह सकते हैं कि ग्रामीण एवं शहरी लड़कियों में कार्टून देखने से परानुभूति का विकास अधिक देखने को मिला है ।

संदर्भ ग्रंथ

{1} अरोरा, रंजना (1984) "बच्चों की अध्ययन की आदतों पर टेलीविजन का प्रभाव।

{2} अस्थाना, विपिन (2007.2008), पंद्रहवां संस्करण, "मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन", अग्रवाल पब्लिकेशन आगरा।

{3} अग्रवाल, जे.सी. (2005) द्वितीय संस्करण, "शैक्षणिक, तकनीकी एवं प्रबंध" विनोद पुस्तक मंदिर आगरा।

{4} भटनागर ए.बी., भटनागर मीनाक्षी, भटनागर अनुराग (2008) "शैक्षणिक एवं मानसिक मापन", आर.लाल बुक डिपो आगरा।

{5} भटनागर (2007) "शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का विकास" विनय रखेजा, आर.लाल बुक डिपो मैरठ।